# सामाजिक परिवर्तन : ~~अर्थ एवं प्रकार~~ (Social change)

* परिचय
* अर्थ
* विशेषताएं
* प्रतिमान व प्रकार
* सामाजिक परिवर्तन में राजनीतिक भूमिका

---

**परिचय** : समाज और उसकी संस्कृति में हमेशा परिवर्तन होता रहता है। समाज परिवर्तनशील एवं गतिशील है। प्रत्येक समाज में चाहे वह आदिम हो या आधुनिक, यह प्रक्रिया लगातार गति करती रहती है। विश्व में ऐसा कोई भी समाज नहीं है, जो परिवर्तन से अछूता रहा हो। यह सत्य है कि सामाजिक परिवर्तन का स्वरूप बदल जाता है। यदि परिवर्तन मानवीय प्रयासों से संभव है तो हमें मनुष्य की इस प्रक्रिया में क्या भूमिका निभानी चाहिए। इस प्रकार सामाजिक परिवर्तन से जुड़े विषयों पर विचार पहले से होते आ रहे हैं, किन्तु वैज्ञानिक व्याख्या एवं व्यवस्थित अध्ययन 19 वीं सदी से प्रारंभ होता है।

## अर्थ एवं परिभाषा
## (Meaning and definition of Social change)

सामाजिक परिवर्तन का अभिप्राय समाज एवं उसकी संरचना में होनेवाले परिवर्तनों से लगाया जाता है। समाज विज्ञान के प्रारंभिक विद्वानों ने सामाजिक परिवर्तन की अवधारणा को विकास एवं प्रगति के रूप में देखा। यद्यपि विद्वानों ने इसे स्पष्ट नहीं किया, किन्तु 1922 में आगबर्न ने अपनी कृति 'Social change' में इसकी एक विशद व्याख्या की है।

सामाजिक परिवर्तन को विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने तरीके से परिभाषित किया है —

किंग्सले डेविस के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन से हम केवल उन्हीं परिवर्तनों को समझते हैं जो सामाजिक संगठन अर्थात् समाज के ढांचे और प्रकार्यों में घटित होते हैं।"

जिन्सबर्ग के अनुसार, "सामाजिक परिवर्तन से मेरा अभिप्राय सामाजिक ढांचे में परिवर्तन अर्थात् समाज के आकार, इसके विभिन्न अंगों अथवा इसके संगठन के तत्वों की बनावट एवं संतुलन में होनेवाले परिवर्तन से है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि परिवर्तन एक व्यापक प्रक्रिया है। समाज के किसी भी क्षेत्र में होने वाले किसी भी प्रकार के परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहा जा सकता है।

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

## सामाजिक परिवर्तन की विशेषताएं

(1) **सामाजिक परिवर्तन की प्रकृति सामाजिक होती है** : इसका अभिप्राय यह है कि सामाजिक परिवर्तन का संबंध किसी एक व्यक्ति विशेष, समूह, जाति एवं प्रजाति तथा समिति के जीवन के परिवर्तन से नहीं है। इस प्रकार का परिवर्तन तो व्यक्तिवादी प्रकृति का होता है, जबकि सामाजिक परिवर्तन का संबंध सम्पूर्ण समुदाय एवं समाज में होने वाले परिवर्तन से है।

(2) **सामाजिक परिवर्तन एक सार्वभौमिक घटना है**. सामाजिक परिवर्तन प्रत्येक समाज में घटित होता है। शायद ही ऐसा कोई समाज हो जो अपने अस्तित्व को स्थिर रख सका हो या स्थिर है। यह परिवर्तन समाज में चलने वाली एक प्रक्रिया है जो किसी-न-किसी रूप में निरन्तर चलती रहती है,

(3) **सामाजिक परिवर्तन की अनिवार्यता**. सामाजिक परिवर्तन प्रत्येक समाज में अनिवार्यतः होता है। प्रत्येक समाज की प्रगति का आकांक्षी होता है और प्रगति के लिए आवश्यक है कि समाज की सामाजिक संरचना में परिवर्तन किया जाए। यही कारण है कि प्रत्येक समाज परिवर्तन की अनिवार्यता को स्वीकार करता है।

(4) **सामाजिक परिवर्तन एक जटिल प्रघटना है**: सामाजिक परिवर्तनों का संबंध गुणात्मक परिवर्तनों से है जिनका कि मापतौल संभव नहीं है। किसी भी भौतिक संस्कृति में होनेवाले परिवर्तन को माप-तौल के आधार पर प्रकट कर सकते हैं, किन्तु सामाजिक मूल्यों, विचारों, विश्वासों, संस्थाओं एवं व्यवहारों में होनेवाले परिवर्तन को माप नहीं सकते।

(5) **सामाजिक परिवर्तन की भविष्यवाणी संभव नहीं**: सामाजिक परिवर्तन के बारे में निश्चित रूप से पूर्वानुमान लगाना कठिन है। अतः इसके बारे में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। कारण यह है कि अनेक आकस्मिक कारक भी सामाजिक परिवर्तन की स्थिति उत्पन्न करते हैं।

## सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान या प्रकार

सभी समाज और सभी कालों में सामाजिक परिवर्तन एक जैसा नहीं होता है। इसलिए सामाजिक परिवर्तन के क्षेत्र में हमें विभिन्न प्रकार के देखने को मिलते हैं। मैकाइवर एवं पेज ने सामाजिक परिवर्तन के तीन प्रतिमान का उल्लेख किया है —

(1) **रेखीय परिवर्तन का प्रतिमान**: यह सामाजिक परिवर्तन का वह प्रतिमान है जिसमें परिवर्तन की दिशा सदैव ऊपर की ओर होती है अर्थात परिवर्तन एक क्रम में विकास की ओर एक ही दिशा में निरंतर होता है। जो आविष्कार आज हुआ है कल उससे आगे का आविष्कार होगा। परिवर्तन के इस प्रतिमान में परिवर्तन रेखीय (Linear) होता है और उसे एक रेखा से प्रदर्शित किया जा सकता है। अधिकांश विकासवादी (Evalutionist) एक रेखीय

Scanned with CamScanner

सामाजिक परिवर्तन में विभिन्नता पाई है। अतः परिवर्तन की गति तीव्र या मन्द होती रहती है जैसा कि रेखाचित्र से स्पष्ट है :

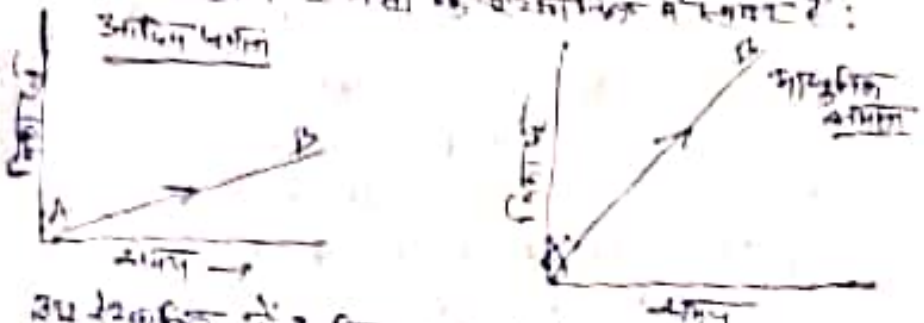







उपरोक्त रेखाचित्र में आदिम समाज परिवर्तन की गति धीमी है जबकि आधुनिक समाज में गति अपेक्षाकृत अधिक है।

(2) **उतार-चढ़ाव परिवर्तन का प्रतिमान :**

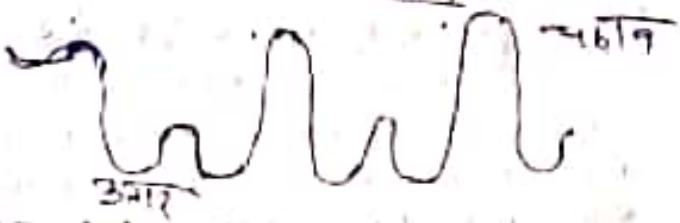




सामाजिक परिवर्तन आगे बढ़ने के बजाय ऊपर-नीचे की होती है। इसकी प्रकृति में है कि प्रतिमान में परिवर्तन का क्रम है गति अथवा अवनति की ओर चलते हैं, बाद विपरीत दिशा की ओर मुड़ जाता है। क्योंकि ऐसे परिवर्तन में परिवर्तन की दिशा ऊपर की ओर होती है ऊपर से नीचे की ओर तथा नीचे से है। इसलिए इसे उतार-चढ़ाव परिवर्तन कहते हैं। इसकी गति भी आधुनिक समाज तीव्र और आदिम समाज में मन्द रहती है।

(3) **चक्रीय परिवर्तन का सिद्धान्त :** सामाजिक परिवर्तन के तीसरे प्रतिमान को चक्रीय परिवर्तन का सिद्धान्त कहा गया है इसे चक्रीय परिवर्तन के नाम से भी जाना जाता है। इस दृष्टिकोण के समर्थकों का मानना है कि परिवर्तन का एक चक्र चलता है। जैसे प्रकृति में हम देखते हैं कि सर्दी, गर्मी एवं वर्षा एक चक्रीय क्रम में पाया जाता है। मनुष्य में भी जन्म, बाल्यावस्था, यौवन एवं मृत्यु का चक्र देखने को मिलता है। कई विद्वानों की मान्यता है कि समाज की व्यवस्थाएं भी इसी चक्र का अनुसरण करती हैं।




## सामाजिक परिवर्तन में राजनीतिक कारक की भूमिका

**राजनीतिक दल :** किसी भी देश में सामाजिक परिवर्तन का आधार राजनीतिक दल सक्रिय रूप से परिवर्तन के लिए प्रस्तुत है। अन्य कारकों की तुलना में तीव्र गति से परिवर्तन का एजेंट है। विभिन्न राजनीतिक दलों ने संसार के अनेक देशों में परिवर्तन की गति प्रदान की है। रूस और चीन साम्यवादी दल के नियंत्रण में आने के बाद एक नियोजित नीति के अन्तर्गत परिवर्तित हुए।

Scanned with CamScanner

विद्वानों का मानना है कि जैसी राजनीतिक व्यवस्था होती है, वैसी ही सामाजिक व्यवस्था बन जाती है, वैसा ही सामाजिक परिवर्तन हो जाता है।

**सैनिक कारक (Military factors)** : इतिहास की अनेक घटनाओं में युद्ध एवं सैनिक की राजनीतिक घटनाएं हैं। ऐसा माना जाता है कि इतिहास एक भूतकालीन राजनीति है और राजनीति वर्तमान इतिहास। सीले ने ठीक ही कहा है, "इतिहास का अध्ययन मुख्य रूप से राजनीति है।" कुछ लोगों का कहना है कि इतिहास का लेखन सैन्य शक्ति के आधार पर किया जाता था। इस सिद्धान्त के मानने वालों का मत है कि ऐतिहासिक, धार्मिक एवं आर्थिक तत्व सामाजिक जीवन पर जोर देते हैं, परिवर्तन सभी मानवीय अभिप्रेरणा की सैन्य शक्ति द्वारा लाये जाते हैं। इस दृष्टि से इतिहास को युद्धों के वर्णन में समझा जाता।

यदि मैराथन की लड़ाई में एथेन्स के लोगों ने ईरानियों को हरा दिया होता, यदि नेपोलियन का वाटरलू का आक्रमण सफल हो गया होता, यदि हिटलर इंग्लिश चैनल पार करने में सफल हो गया होता तो यूरोप के इतिहास के अनुसार मानचित्र कुछ और ही होता। यदि परिवर्तन की बात करें तो इतिहास भरा है और गलत घटनाओं के युद्धों और उनके आक्रमणों का। युद्ध भी समाज में अनेक परिवर्तन लाते हैं। युद्ध के बाद कई लोग शरणार्थी बन जाते हैं और यहाँ की संस्कृति के अनुरूप ढलना पड़ता है। युद्ध के बाद सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था तहस-नहस हो जाती है। इस प्रकार युद्ध एवं सैनिक शक्ति सामाजिक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**राजनीतिक दल** : राजनीतिक दल भी सामाजिक परिवर्तन के प्रमुख कारक होते हैं। राजनीतिक दलों की अपनी-अपनी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियाँ होती हैं। जब एक राजनीतिक दल के स्थान पर दूसरा राजनीतिक दल सत्ता में आता है तो वह अपने दल की विचारधारा के अनुरूप नीतियों को क्रियान्वित करने का प्रयास करता है तो समाज में भी इन नीतियों के परिणामस्वरूप परिवर्तन आते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक परिवर्तन में राजनीतिक कारक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

——— x ———

Girijesh Singh (Asst. Professor)
Deptt. Political Science
R.K. College, Madhubani
Class – Deg I (H), Paper – I
Topic: सामाजिक परिवर्तन (Social change)
Date: 06/05/2020

Scanned with CamScanner